कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती

भाकृअनुप
ICAR

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र
सेवनियां, जिला – सीहोर (म.प्र.)

CRDE

कद्दू वर्गीय सब्जियो के परम्परागत उत्पादन पद्धति में वैज्ञानिक तकनीक का समावेश कर प्रति इकाई क्षेत्र से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती वर्ष भर की जा सकती है। पोषण की दृष्टि से कद्दू वर्गीय सब्जियो में विटामिन, खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। कद्दू वर्गीय सब्जियों में लोकी, खीरा, ककडी, गिलकी, टिण्डा, करेला, तरबूज, आदि आते है।

भूमि :- कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती के लिए रेतीली दोमट मृदा उपयुक्त होती है।

भूमि की तैयारी :- इसकी खेती के लिए एक बार मिट्टी पलट हल से जुताई कर पाटा लगा देना चाहिए। खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था होना चाहिए।

अनुसंशित किस्में :-

क्र.	फसल का नाम	उन्नतशील किस्म	संकर किस्में
1	लौकी	पूसा नवीन, पूसा मेघदूत, पूसा मंजरी, अर्का बहार	एन. एस. –421 कावेरी, उर्वशी
2	करेला	पूसा विशेष, अर्काहरित, बारहमासी, समरग्रीन	नैनो, विनय, नव विवेक, अमनश्री
3	तोरई	पूसा चिकनी, हरिता, उत्सव, पूसा स्नेहा	एस.एस. – 401 सुरेखा, लता ग्रीन गोल्ड
4	कद्दू	पूसा विश्वास, अर्का चंदन	पूसा संकर – 1 कंचन, सुचित्रा
5	खीरा	जापानी लांगग्रीन उपहार	एन.एस. – 46, हिमांगी
6	ककडी	अर्का शीतल, लखनऊ अगेती	कुमुदनी, लखनवी
7	खरबूज	पूसा सरबती, हरामधु	मधुरिमा, रसिका
8	तरबूज	शुगर बेबी, अर्का ज्योति, दुर्गापुर केसर	माधुरी – 64, एन.एस. – 295, शीतल, शुगर किंग

बीज दर व पौध अंतरण :-

फसल का नाम	बीज दर (किग्रा/है.)	पौध अंतरण (से.मी)
लौकी	1.5 – 2.0	300 x 75
करेला	1.5 – 2.25	150 x 50
तोरई	1.25 – 2.5	300 x 75
कद्दू	1.5 –.2.0	300 x 100
खीरा	0.8 – 1.0	200 x 60
तरबूज	0.8 – 1.0	250 x 70
खरबूज	0.5 – 1.0	250 x 70

बीजोपचार :-

फफूँदनाशक – फफूंद जनित बीमारियों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम + थायरम 2 ग्राम या ट्रायकोडर्मा 5 ग्राम या ट्रायकोडर्मा 4 ग्राम + कार्बोक्सिन 1 ग्राम प्रति किग्रा. की दर से बीज को उपचारित करें

कीटनाशक – रस चूसक कीटों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व थायोमिथाक्जॉम 70 डब्ल्यू. एस. की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा. बीज उपचार करें।

कद्दू वर्गीय सब्जियों जैसे – करेला, तोरई, तरबूज, टिण्डा के बीज कवच काफी कठोर होते है, जिससे बीज का जमाव कम होता है। नम बीजो को गीले जूट के बोरें मे लपेट कर 3–4 दिनों

क्रमांक	सब्जियॉ	भिगोने की अवधि
1	खरबूज, खीरा, ककडी	3 –4 घण्टे
2	लौकी, चिकनी तोरई	6 –7 घण्टे
3	तरबूज, टिण्डा	10 –12 घण्टे
4	करेला	36 घण्टे

तक छायादार स्थान पर रखनें से अंकुरण शीघ्र हो जाता है।

खाद व उर्वरक :-

अंतिम जुताई के समय 25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से सडी गोबर की खाद का उपयोग करना चाहिए। सामान्यतः कद्दू वर्गीय सब्जियो के लिए 80 – 100 किग्रा. नाइट्रोजन, 60–80 किग्रा फास्फोरस तथा 40 – 60 किग्रा पोटॉश प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए। रसायनिक उर्वरको का उपयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए।

सहारा देना:- कद्दू वर्गीय सब्जियों में सहारा देना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। जिससे उच्च गुणवत्ता युक्त उपज प्राप्त होती है।

सिचाई प्रबन्धन:- गर्मी के मौसम में कद्दू वर्गीय फसलों में गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन प्राप्त करने के लिए उचित सिंचाई प्रबन्धन करना आवश्यक है। हाल के कुछ वर्षों में इन फसलों में ड्रिप सिंचाई पद्धति के माध्यम से सिंचाई करने से अच्छे परिणाम प्राप्त हुए है। इस पद्धति में जहॉ एक और गुणवत्ता पूर्ण अधिक उत्पादन प्राप्त होता है, वही दूसरी और परम्परागत पद्धति की तुलना में 50 – 60 फीसदी सिंचाई जल की बचत होती है।

खरपतवार प्रबन्धन:-

कद्दू वर्गीय सब्जियो से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि खेत में खरपतवार न हो। इन सब्जियो में बुवाई के 15 से 20 दिन बाद हाथ से निंदाई – गुडाई करना चाहिए। खरपतवार प्रबन्धन हेतु बुवाई से पहले पेण्डीमेथलीन 800 – 1000 मिली. का प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिये।

फसल सुरक्षा – प्रमुख कीट व नियंत्रण

1. लाल भृंग :- इस कीट का प्रौढ पत्तियों एवं फूलों को खाता है, तथा भूमि के अंदर पौधे की जडो को भी क्षति पहुंचाता है।

नियंत्रण :- प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी.की 700 – 800 मि.ली मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 – 600 लीटर पानी में घोंल बनाकर छिडकाव करना चाहिये।

2. फल मक्खी :- यह फलो के अन्दर घुसकर पुरे फल को नुकसान पहुॅचाती है।

नियंत्रण :- डायमिथोएट की 700 – 800 मिली मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 – 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिये।

3. माहू :- यह कीट पत्तियों का रस चूसता है, जिससे पत्तियॉ पीली पडने लगती है।

नियंत्रण :- इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 प्रतिशत की 120 मिली. मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिये।

प्रमुख रोग व नियंत्रण

1. चूर्णीला आसिता :- पत्तियों व तनों में सफेद – भूरा पावडर दिखायी देता है।

नियंत्रण :- कार्बेन्डाजिम या मेन्कोजेब की 700 – 800 ग्राम मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।

2. मृदुल आसिता :– प्रभावित पौधो की पत्तियों के निचली सतह पर कोषाकार धब्बे बन जाते है, जो ऊपर से पीले या भूरे रंग के दिखायी देते है।

नियंत्रण :– कॉपर आक्सीक्लोराइड की 500 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 – 600 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

3. विषाणु रोग :– प्रभावित पौधों की पत्तियों पर पीले रंग की धारिया बन जाती है तथा पौधो की बढवार रूक जाती है।

नियंत्रण :– इस रोग का फेलाव रसचूसक कीटों के कारण होता है, इसलिए इसके नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 प्रतिशत की 120 मिली. मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिये।

–:प्रकाशक:–

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

फोन - 07561-281834, ई-मेल : crdekvksehore@gmail.com